Research Paper | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 8 | AUGUST 2025

हिंदुस्तान का विभाजनः कारण एवं उत्तरदायी कारक

आकाश रैना [1]

[1] **सहायक आचार्य, भूगोल, दादा पम्मा राम गर्ल्स पीजी कॉलेज श्री विजयनगर.**

ABSTRACT:

हिंदुस्तान का विभाजन कोई सहसा मन में उठा विचार नहीं था, बल्कि यह तो दीर्घ अवधि की महत्तवपूर्ण घटनाओं का दुष्परिणाम था, 1930 तक कोई भी, चाहे वह पेशावर का रहने वाला हो या दिल्ली का रहने वाला, विभाजन का विचार भी कई प्रकाष वर्ष दूर था। यहां तक कि जिन्नाह ने भी ‘‘पाकिस्तान’’ या बँटवारे की कल्पना नहीं की थी परन्तु जैसा कि ‘नियति निश्चित’ था समयानुसार ऐसी घटनाएं घटित हुई कि हिंदुस्तान का विभाजन होकर रहा।

KEYWORDS:

पाकिस्तान, मुस्लिम लीग सी.आर. फॉर्मूला कायदे- आजम, सीधी कार्यवाही दिवस, मांउट - बैटन योजना ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
21st August 2025	23rd August 2025

- **हिन्दुस्तान के विभाजन हेतु उत्तरदाई प्रमुख घटनाएं:-**
  - लखनऊ पैक्ट (1916ई.)
  - मुस्लिम लीग का गठन
  - 1937ई. के चुनाव
  - 1940 का लाहौर अधिवेषन
  - सी.आर. फॉर्मूला
  - गाँधी - जिन्नाह वार्ता
  - 1945-46 के चुनाव
  - अंतरिम सरकार का गठन
  - सीधी- कार्यवही दिवस
  - एटली की घोषणा
  - माउंट बैटन योजना

- **पाकिस्तानः-**

प्रायः पृथक ‘पाकिस्तान’ के विचार का प्रवर्तक, कवि और राजनैतिक चिन्तक ‘मुहम्मद इकबाल’ को माना जाता है 1930 के इलाहाबाद अधिवेषन (मुस्लिम लीग) में उन्होंने कहा था, ‘‘यदि यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया जाता हैं कि भारत के साम्प्रदायिक प्रष्न का स्थाई हल भारतीय मुसलमानों को अपने देश भारत में अपनी संस्कृति और परम्पराओं के पूर्ण और स्वतंत्र विकास का अधिकार है, तो मेरी इच्छा यह होगी कि पंजाब, उ.प. सीमान्त प्रांत, सिन्ध और ब्लूचिस्तान को मिलाकर एक राज्य बना दिया जाए’’

परन्तु पृथक पाकिस्तान का स्पष्ट विचार ‘कैम्ब्रिज’ के एक विद्यार्थी ‘चैधरी रहमत अली’ के मन में उत्पन्न हुआ जिसे उन्होंने 1933और 1935 में लिखे गए दो परचों में एक नई अस्मिता के लिए एक अलग राष्ट्रीय दर्जे की मांग की थी जिसे उसने ‘पाकिस्तान’ नाम दिया था।

- **मुस्लिम लीगः**

कांग्रेस की बढती हुई शक्ति को देखते हुए ब्रिटिष क्राउन को चिंता होने लगी कि भारत में अंग्रेजी राज्य को बनाए रखना है तो कांग्रेस का कोई प्रतिकार ढूंढना पडेगा एक ऐसा प्रतिकार था ‘सांप्रदायिक पृथक चुनाव मंडल’, अर्थात् मुसलमानों के लिए पृथक स्थानों का आरक्षण इसी संदर्भ में ‘आगा खां’ एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ 1906ई द्वारा शिमला में लार्ड मेयो से मिले मुस्लिम नेताओं द्वारा केन्द्रीय मुस्लिम सभा बनाने का विचार हुआ जिसका उद्देष्य केवल मुसलमानों के हितों की रक्षा करना हो। इस प्रकार 30 दिसम्बर 1906ई. को ‘अखिल भारतीय मुस्लिम लीग’ का विधिवत उद्घाटन किया गयां प्रथम अध्यक्ष आगा खां नियुक्त हुए और 1907ई. के कराची अधिवेषन में ‘मौलाना मुहम्मद अली’ द्वारा लिखित संविधान स्वीकार किया गया इसी मुस्लिम लीग ने 1930ई. के बाद से ही ‘मुहम्मद अली जिन्नाह’ के नेतृत्व में पाकिस्तान की सशक्त मांग पकड़ ली और अन्त में अमल में लाकर ही दम लिया।

- **लाहौर अधिवेषन(1940):-**

1937ई. के चुनाव परिणामों के बाद से ही पंजाब, बंगाल और सिंध की प्रांतीय/ स्थानीय मुस्लिम पार्टियों का सहयोग जिन्नाह और मुस्लिम लीग को मिलने लगा जिससे जिन्नाह के आत्मविष्वास में और वृद्धि हुई उसने ‘पृथकतावादी नीति’ (Separatist Policies) का अनुमोदन करते हुए अपनी पाकिस्तान की मांग को कुछ कदम आर बढा दिया।

इन भावनाओं का साकार रूप 23 मार्च 1940 के मुस्लिम लीग द्वारा प्रसिद्ध लाहौर अधिवेषन हुआ ‘फज्ल-उल-हक’ द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव जिसमें उत्तर- पष्चिम तथा पूर्वी भारत के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को पृथक स्वतंत्र - स्वायत राज्य का रूप दिए जाने की बात कही गई।

- **सी.आर. फॉर्मूलाः-**

स्वतंत्र भारत के प्रथम हिन्दु व अंतिम गवर्नर जनरल ‘चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (राजाजी), जो 1942ई. से ही मुस्लिम लीग से वार्ता करने पर जोर दे रहे थे एवं आत्मनिर्णय के अधिकार के नाम से मुसलमानों की पाकिस्तान मांग स्वीकार कर ली थी उन्होनें 10 जुलाई 1944 को अपनी योजना प्रकाशित की जो सी.आर. फॉर्मूला’ के नाम से विख्यात हैं।

इस योजना के अनुसार मुस्लिम लीग जो कि अंग्रेजों के प्रति वफादार थी, भारत की स्वतंत्रा की मांग का समर्थन करेगी तथा उत्तर पूर्व तथा उत्तर पश्चिम मुस्लिम बहुल प्रदेशों हेतु एक आयोग नियुक्त किया जाएगा और जनमत लिया जाएगा कि वे प्रदेश भारत से अलग होना चाहते है या नहीं। ये शर्ते तभी लागू होगी जब ब्रिटेन भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करेगा। इस प्रकार यह कहने में कोई दो राय नहीं कि इस योजना (सी.आर. फॉर्मूला) ने पाकिस्तान विभाजन हेतु बल प्रदान किया।

- **गाँधी- जिन्नाह वार्ताः-**

सी.आर. फॉर्मूला के तहत गाँधी और जिन्ना मे हिन्दुस्तान के विभाजन को लेकर वार्ता आरम्भ हुई परन्तु दो सप्ताह से अधिक चलने के बाद भी सितम्बर 1944 में यह वार्ता विफल

हो गई।

यद्यपि इस असफल वार्ताका सम्पूर्ण लाभ जिन्ना को मिला जिन्ना का अखिल भारतीय महत्व बढ गया और विभाजन का मुद्दा अधिक चर्चा का विषय बना। गाँधी ने जिन्नाह को 'कायदे-आजम' कहना शुरू कर दिया।

- **सीधी कार्यवाही दिवसः-**

कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत अंतरिम सरकार का गठन किया गया लेकिन कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य गहन मतभेदों और एक अलग मुल्क की मांग के कारण यह प्रयास भी विफल रहा। अतः अब लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्यवाही' का एक कार्यक्रम तैयार किया। 29-30 जुलाई को दीर्घावधी योजना वापिस लेने पर मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त 1946 को 'सीधी कार्यवाही दिवस (Direct Action Day) मनाने का आह्वान किया।

दंगो का आरम्भ 16-17 अगस्त को कलकत्ता से हुआ जो बाद में बम्बई, नोआखली (बंगाल), बिहार, गढमुक्तेष्वर (संयुक्त प्रांत) तथा पंजाब तक फैल गया। अनुमान है कि इन दंगों में कुल 180000 लोग मारे गऐ और करोड़ो की सम्पति बर्बाद हुई। मुस्लिम लीग द्वारा प्रायोजित इन दंगो ने देष में साम्प्रदायिकता को और गहरा किया व विभाजन की तरफ एक कदम और बढा दिया।

- **एटली की घोषणाः-**

20 फरवरी 1947 को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री 'क्लीमेंट एटली' ने House of Commons में घोषणा की, ''सम्राट की सरकार जून 1948 तक प्रभुसता भारतीयों के हाथों सौंप देगी।'' उन्होंने बंटवारे की बात भी मान ली। इस घोषणा के बाद लीग ने अपनी कार्यवाही और तेज कर दी।

- **मांउटबैटन योजनाः-**

24 मार्च 1947 को 'लुई माउंट बैटन' ने वेवेल से गवर्नर जनरल का उतरदायित्व स्वीकारा। माउंट बैटन इस निष्कर्ष पर पंहुचे कि देष की समस्या का एकमात्र समाधान विभाजन तथा पाकिस्तान की स्थापना ही है। माउंटबैटन ने पहले पटेल और फिर लेडी माउंटबैटन की सहायता से नेहरू को भी समझा - बुझाकर अपने पक्ष में कर दिया।

- **विभाजनः-**

माउंट बैटन योजना को 3 जून को प्रकाषित किया गया। कांग्रेस और लीग ने इसे स्वीकार कर लिया और देश के विभाजन की तैयारी आरम्भ हो गई। सिंध,पूर्वी बंगाल, पष्चिमी पंजाब, बलूचिस्तान और असम के सिल्हट जिले ने पाकिस्तान में शामिल होने का फैसला किया।

4 जुलाई 1947 को ब्रिटिष संसद में भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पेष किया गया। 15 जुलाई को House Of Commons, 16 जुलाई को House of Lords तथा 18 जुलाई को सम्राट (King) ने हस्ताक्षर कर दिए। इस प्रकार 15 अगस्त 1947 को दो डोमिनयनों- भारत और पाकिस्तान में बांट दिया गया। 14 अगस्त 1947 ई. को पाकिस्तान की स्थापना हुई। मुहम्मद अली गवर्नर जनरल और लियाकत अली प्रधानमंत्री बने। जवाहर लाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री बने।

- **निष्कर्षः-**

हिंदुस्तान का विभाजन कोई अकस्मात् घटना नहीं थी बल्कि कई कारक उत्तरदायी थे जिनमे ब्रिटिष सरकार, जिसे कभी 'अखण्ड भारत' रास नहीं आया और मुस्लिम प्रथतावाद् को प्रोत्साहन दिया। कांग्रेस जिसने हमेशा मुसलमानों को खुश करने का रवैया अपनाया तथा 1916 ई. के लखनऊ पैक्ट में मुसलमानों के पृथक निर्वाचन की मांग स्वीकार कर ली और कभी मुस्लिम लीग के उद्देश्यों को नहीं समझा । भारतीय नेता जिनमें गांधीजी ने 'मुसलमानों के आत्मनिर्णय को अधिकार' मिलने की बात कही, सी.राजगोपालाचारी जिनके सी.आर. फॉर्मूला (1944)मे सर्वप्रथम विभाजन को स्वीकार किया और अंत में मुस्लिम लीग, जिसने अपनी अलग पृथकतावादी विचारधारा, अंग्रेजों के प्रति राजभक्ति एवं 1930 के बाद मुहम्मद अली जिन्नाह ने नेतृत्व में विभाजन को अमल में लाया। जिन्नाह के शब्दों में ''मैनें अपनी कलम व सेक्रटरी की सहायता से पाकिस्तान का भाग्य लिख दिया।''

REFERENCES

1. रामलखन शुक्ला- आधुनिक भारत का इतिहास

2. बी.एल. ग्रोवर,अलका मेहता, यशपाल - आधुनिक भारत का इतिहास, एक नवीन मूल्यांकन

3. बिपिन चन्द्र- 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष'

4. सुमित सरकार- आधुनिक भारत

5. शर्मा और व्यास - आधुनिक भारत का इतिहास